अलंकार (द्वितिय वर्ष)

गायन-वादन(स्वर वाद्य)

क्रियात्मक:

अलंकार द्वितिय वर्षके लिये नये कुल आठ राग रखे गये हैं जिनमे विलंबित और द्रुतलय की रचनाओ के साथ आधा-पौन घन्टे गाने/बजाने की क्षमता विद्यार्थी में होनी चाहिए|

मंच प्रदर्शन के लिए विद्यार्थी इच्छानुसार इस वर्ष के रागों में से कोई राग चुन सकता है, तथा एक ठुमरी, भजन अथवा ललित शैली की कोई भी रचना चुन सकता है| विस्तृत अध्ययन के रागों में विलंबित और द्रुत रचना के साथ पूर्ण विस्तृत अपेक्षित है| इसके अलावा इन रागों में रचना-वैचित्र्य आदि का ध्यान रखकर अतिरिक्त बन्दिशों का अच्छ संकलन विद्यार्थी को करना चाहिए, जिसमें ध्रुपद, धमार, तराने, चतुरंग, त्रिवट, विविध तालों की बन्दिशें आदि को समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो| धृपद, धमार विस्तृत तथा साधारण रागोमें से होना चाहिए| गायन-वादन की विभिन्न शैलियों को प्रदर्शित करने वाली कुछ रचनाएँ भी संग्रहित करनी चाहिए| सभी प्रचलित तालों के ठेके विभिन्न लयकारियों (दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढगुन, सवागुन आदि) में बोलने का अभ्यास होना चाहिए| स्वरलिपि करने तथा पढने में विशेष योग्यता| तुरन्त नई स्वर रचना बनाने का अभ्यास|

राग:-

विस्तृत अध्ययन के लिए-

१) बिलासखानी तोडी   २) देवगिरी बिलावल

३) नटभैरव   ४) कोमल रिषभ आसावरी

५) रामकली   ६) देसी

७) जोगकंस   ८) बिहागडा

* मंडल की प्रथम तीन-चार परीक्षाओं में जो मूल रागों की केवल बंदिशें और प्राथमिक स्वरुप की गायकी होती है उन्ही मूल रागों में कुछ सालों के बाद अलंकार-प्रथम वर्ष व द्वितिय वर्ष में विद्यार्थी अपने घराने की विशिष्ट व अष्टांगप्रधान गायकी का प्रयोग कर सके इसी उद्देश से इस वर्ष मूल रागों में परिपूर्ण गायन अपेक्षित है| इससे कलाकार का व्यक्तित्व उभरकर सामने आयेगा| मूल रागों में से किन्ही पाँच रागोंको तैय्यार करना है|

* **मूल राग**:- (१) भूपाली   (२) मियाँमल्हार

(३) छायानट   (४) बागेश्री

(५) पूर्वी   (६) दरबारी कानडा

(७) केदार   (८) पूरिया धनाश्री

* **साधारण ज्ञान के लिए निम्नलिखित राग**:-

(१) रागेश्री   (२) श्री

(३) खम्बावती   (४) चंद्रकंस

(५) देवगांधार   (६) नायकी कानडा

(७) आभोगी (८) मेघ मल्हार

अंकपत्रिका:

सूचना: इस परीक्षा के लिए डेढ घंटा समय निर्धारित किया है| इस के अतिरिक्त ३० मिनट का मंच प्रदर्शन श्रोताओं के सामने(संगीत सभा की तरह) अलग से होगा| मंच प्रदर्शन में परीक्षार्थी को इस वर्ष का राग प्रस्तुत करना होगा| गायन के परीक्षार्थी चाहे तो स्वर वाद्य की संगत भी केवल मंच प्रदर्शन के समय ले सकते हैं| निर्धारित समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछे जाने चाहिए| इस लिए परीक्षार्थी से उत्तर मिलने के लिए ज्यादा प्रतीक्षा करनी नहीं चाहिये| परीक्षार्थी को भी इस बात से परीक्षा के पूर्व अवगत कराये|

वाद्य मिलाना: तानपुरा तथा अपना वाद्य स्वर में मिलाना:25 अंक|

विस्तृत अध्ययन के राग: कुल पांच रागों की विस्तृत चर्चा तथा निम्न प्रकार से प्रस्तुति:

(१) संपूर्ण विस्तार के साथ विलंबित बंदिश (10 मिनट):15 अंक|

(२) मध्य लय में बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ (7 मिनट): 12 अंक|

(३) विलंबित बंदिश 3 आलापों के साथ:10 अंक|

(४) मध्यलय की बंदिश तानों के साथ:7 अंक|

(५) राग वाचक आलाप के साथ विलंबित बंदिश:6 अंक|

कुल 50 अंक|

सामान्य अध्ययन के राग: कुल पांच रागों की चर्चा तथा आलापोंद्वारा उनका स्वरूप स्पष्ट करना: कुल 25 अंक|

धृपद-धमार नोम् तोम् के आलाप| वाद्य हो तो आलाप जोड: 5 अंक| धृपद धमार या तत्सम गत की बंदिश:2 अंक, उस की तिगुन:3 अंक, तथा डेढगुन या बोलबांट:5 अंक|

कुल 15 अंक|

उपशास्त्रीय गीत प्रकार: ठुमरी, भजन, लोकगीत तथा नाट्यगीत, इनमें से दो गीत प्रकार|

वाद्य हो तो तत्सम प्रकार की दो धुनें| 10 अंक|

अलग अलग तालों मे गाने की क्षमता: विलंबित बंदिशें अलग अलग तालों में:10 अंक| मध्यलय की बंदिशें अलग अलग दो तालों में:10 अंक| (दोनों में थोडा अपेक्षित विस्तार): कुल 20 अंक|

पिछले राग: प्रथम वर्ष से विशारद तक के रागों में से पांच रागों के आलाप तथा तानों का स्वरूप| इस में ऐसे राग पूछे जाएँ, जिस की चर्चा विस्तृत अध्ययन एवं सामान्य अध्ययन के रागों के साथ नही हुई| कुल 20 अंक,

अन्य गीत प्रकार: तराना, चतरंग, त्रिवट या अतिद्रुत लय की गत| इन में से एक प्रकार उस में अपेक्षित विस्तार के साथ:10 अंक|

ताल तथा लयकारी: 1 में 3, 2 में 3, 4 में 3 तथा 4 में 5, इनमें से किन्ही तीन लयकारियों में अलग अलग तालों के ठेके ताली खाली देकर बोलना:15 अंक|

स्वरलिपि: बंदिश सुनकर स्वर लिपि में लिखना तथा लिखि हुई स्वर लिपि को स्वर तथा लय में गाना:10 अंक|

इस वर्ष के रागोमें से एक राग और उपशास्त्रीय संगीत अथवा सुगम संगीत 20 से 30 मिनट तक प्रस्तुति-

मंच प्रदर्शन:100 अंक|